श्रीगणेशायनमः ॥ श्लोकार्थ ॥ ग्रन्थके प्रथम श्लोकके आदि

चरणमेंमगनगन परयोहै सोतीनिहूं अक्षर दीर्घहैं वर्णानां सो गुणको उत्पन्नकरत है पुनिश्लोक के दूसरेचरणमें यगनगन कियो तबप्रथमसोरठामें भगनगनपरेउहै सो शेषके फणितेभयो कृत मंगलमय है अरु श्रीमद्रामायण तो स्वाभाविकै सर्व विनायक जोहैं गणेश तिनदोउनको गोसाईं तुलसीदासजू कहीसमूह परस्पर मिलाप ताकीकर्त्तावाणी है तिनअक्षरनमें शेषके मणितेउत्पन्न भयो है ताको देवता महिजानब दिव्य परयोहै रसानांसो शेषके हृदयतेहै जलदेवताहै पुनि भाषाजब है ताको देवता शशिहै सर्वबीजको पोषणकरतुहै ताते तुलसी मंगलमय है ग्रंथके निर्विघ्न हेतु प्रथमही वाणीजोहै सरस्वती बन्दनाकरतेहैं वर्णजेहैं अक्षर अनेक मैत्रीसंयुक्त तिनको संघट्ट

श्लोक ॥ वर्णानामर्थसंघानांरसानांछन्दसामपि ॥ मंगलानांचकर्त्तारौवंदेवाणीविनायकौ १ भवानीशंकरौवंदे श्रद्धाविश्वास-रूपिणौ॥ याभ्यांविनानपश्यन्ति सिद्धाःस्वांतस्थमीश्वरम् २ वंदेबोधमयंनित्यं गुरुंशंकररूपिणम्॥ यमाश्रितोहिवक्रोऽपिचंद्रः सर्ववंद्यते ३ सीतारामगुणग्राम पुण्यारण्यविहारिणौ ॥ वंदेविशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ४ उद्भवस्थितिसंहार-

अनेकप्रकारके जे अर्थ हैं तिनके कर्त्ता गणेशहैं रसजे हैं शृंगारइत्यादिक तिनकेकर्त्ता सरस्वती हैं अरुअनेकप्रकारके जेछन्दहैं तिनके कर्त्ता गणेशहैं तेद्वौसर्वमंगल के कर्त्ता हैं तौद्वौ अहंबंदे किन्तुवर्णजो अक्षर अरु अर्थ तेहिको मंगल कर्त्तावाणी है अरुरसछन्दकेकर्त्ता गणेश हैं (१) द्वितीय भवानीशंकरौबन्दे श्रद्धास्वरूप श्रीभवानी हैं विश्वासकर्त्ता श्रीशंकर हैं तिनदोउनकी कृपाबिना सिद्धनको ईश्वरजो है परमात्मा स्वकही अपने स्थित अन्तःकरणमें नाहींदेखिपरत है जेहिभवानी शंकरकी कृपाबिना ईश्वरबिषे श्रद्धा विश्वास नहींआवे ताते भवानीशंकरको नमस्कारकरतहौं (२) पुनिगुरुको नमस्कारकरतहौं कैसे हैं गुरु शंकररूप हैं नित्य हैं बोधकही ज्ञानमय हैं जिनशंकर के आश्रय ह्वैके वक्रकही टेढ़बाल चन्द्रमा जो है द्वितीयाको सर्वत्रबन्दनीय है तैसे गुरुनकेशरणागत भयेसंतेजो टेढ़होइ तोजगत्में बन्दनीयहोत है किंतु शंकर सबजगत्के गुरुरूप हैं तिनहींको नमस्कारकरतहौं (३) पुनि कवीश्वर जे बाल्मीकि हैं कपीश्वरजे हनुमान्‌जी हैं तिनको बंदना